|  |
| --- |
| 21. April 2025 |
| **Ostermontag** |
| Erste Lesung: Apg 2, 14.22b-33; Zweite Lesung: 1 Kor 15, 1-8.11; Evangelium: Lk 24, 13-35 oder Mt 28,8-15 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 757, 1-3 | Nun freue dich |
|  | GL 754 | Halleluja lasst uns singen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 5 | Herr Jesus |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 89, 2-5 |  |
|  | Kehrvers: GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 324 | Vom Tode heut erstanden ist |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Brannte nicht unser Herz,* |
|  | *als der Herr unterwegs mit uns redete* |
|  | *und uns den Sinn der Schriften eröffnete.* |
|  |  |  |
|  | Vers (bei Mt 28, 8-15): |  |
|  | *Das ist der Tag, den der Herr gemacht:* |
|  | *lasst uns jubeln und seiner uns freuen.* |
|  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 498, 2 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  | GL 331 | Ist das der Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 755, 1-3! | Halleluja! Auferstanden |
|  | GL 760 / 761, 2 | Jesu, dir jauchzt alles zu |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 752, 3! | Dir danken nun |
|  | GL 533, 1-2 | Lasst uns erfreuen |
|  |  |  |